24761

No. of Printed Pages : 4

बी.एच.डी.ई.-101/ई.एच.डी.-1

स्नातक उपाधि कार्यक्रम

सत्रांत परीक्षा, 2019

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी

बी.एच.डी.ई.-101/ई.एच.डी.-1 : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 100**

नोट : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम प्रश्न** अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से **किन्हीं तीन** की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए : [12x3=36]

(क) गजाधर बाबू ने आहत दृष्टि से पत्नी को देखा। उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी व बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र हैं। जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी माँग में सिन्दूर डालने की अधिकारिणी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है, उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्त्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। वह घी और चीनी के डिब्बों में इतनी रमी हुई है कि अब वही उसकी संपूर्ण दुनिया बन गई है। गजाधर बाबू उसके जीवन के केंद्र नहीं हो सकते।

(ख) महाजन के पास जब साल भर तक सूद न पहुँचा, और न उसके बार-बार बुलाने पर मुंशी जी उसके पास गए, यहाँ तक कि पिछली बार उन्होंने साफ-साफ कह दिया था कि हम किसी के गुलाम नहीं हैं, साहू जी जो चाहें करें तब साहू जी को गुस्सा आ गया। उसने नालिश कर दी। मुंशी जी पैरवी करने भी न गए। एकाएक डिग्री हो गई। यहाँ घर में रुपए कहाँ रखे थे ? इतने ही दिनों में मुंशी जी की साख भी उठ गई थी। वह रुपए का कोई भी प्रबंध न कर सके। आखिर मकान नीलाम पर चढ़ गया।

(ग) बसंत का उदास और अलस पवन आता है, चला जाता है कोई उस स्पर्श से परिचित नहीं। ऐसा तो वास्तविक जीवन नहीं है ? प्रणय! प्रेम! जब सामने से आते हुए तीव्र आलोक की तरह आंखों में प्रकाश पुंज उड़ेल देता है, तब सामने की सब वस्तुएँ और भी स्पष्ट हो जाती हैं। अपनी ओर से कोई भी प्रकाश की किरण नहीं। तब वही केवल वही! हो पागलपन, भूल हो, दुख मिले प्रेम करने की एक ऋतु होती है। उसमें चूकना, उसमें सोच-समझ कर चलना दोनों बराबर है।

(घ) अब मुझे कह लेने दीजिए बाबू जी। ये जो महाशय मेरे खरीददार बन कर आए हैं, इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होता ? क्या उनके चोट नहीं

लगती ? क्या वे बेबस भेड़-बकरियाँ हैं जिन्हे कसाई अच्छी तरह देखभाल कर खरीदते हैं।

(ङ) मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है। आहार-निद्रा आदि पशु-सुलभ स्वभाव उसके ठीक वैसे ही हैं जैसे अन्य प्राणियों के। लेकिन वह फिर भी पशु से भिन्न है। उसमें संयम है, दूसरे के सुख-दुख के प्रति संवेदना है, श्रद्धा है, तप है, त्याग है। यह मनुष्य के स्वयं के उद्भावित बंधन हैं। इसीलिए मनुष्य झगड़े-टंटे को अपना आदर्श नहीं मानता, गुस्से में आकर चढ़-दौड़ने वाली अविवेकी क बुरा समझता है और वचन, मन और शरीर से किए गए असत्याचरण को गलत आचरण मानता है।

2. भारतेंदु युग में हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [16]

3. 'शरणदाता' कहानी की कथावस्तु का मूल्यांकन कीजिए। [16]

4. उपन्यास के प्रमुख तत्त्वों का विवेचन कीजिए और विकास पर एक छोटा सा निबंध लिखिए। [16]

5. प्रतिपाद्य की दृष्टि से 'निर्मला' उपन्यास की समीक्षा कीजिए। [16]

6. 'रात बीतने तक' रेडियो नाटक की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। [16]

7. पटकथा क्या होती है ? पटकथा की दृष्टि से 'घीसा' की विशेषताएँ बताइए। [16]

8. समस्या नाटक के रूप में ध्रुवस्वामिनी का मूल्यांकन कीजिए। [16]

9. 'पगडंडियों पर जमाना' के आधार पर हरिशंकर परसाई की निबंध शैली की विशेषताएँ बताइए। [16]

10. किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : [8x2=16]

(क) 'ठेस' कहानी का परिवेश

(ख) हिन्दी एकांकी

(ग) कथा मंचन

(घ) 'उसने कहा था' का प्रतिपाद्य

----- x -----